RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/280/2015-17
e-paper : www.srushtiagronews.com

बूंदी में नवनिर्मित कृषि उपज मण्डी का लोकार्पण

सृष्टि एग्रो

वर्ष -4 | अंक-16 | जयपुर 1 से 15 नवम्बर 2017 | मूल्य - 2 रुपए | पाक्षिक पृष्ठ-8

उड़द की खरीद के लक्ष्य में हुई बढ़ोतरी

अब 60 हजार मैट्रिक टन की होगी खरीद

जयपुर (कासं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि राज्य में उड़द की बम्पर फसल को देखते हुए समर्थन मूल्य पर इसकी खरीद के लक्ष्यों में 30 हजार मैट्रिक टन की वृद्धि की गई है। अब उड़द की 60 हजार मैट्रिक टन की खरीद की जाएगी। उन्होंने बताया कि मूंग खरीद के लक्ष्यों में वृद्धि करने के लिए भारत सरकार से आग्रह किया गया है। किलक ने बताया कि अब तक राज्य में 38 हजार से अधिक किसानों से 351 करोड़ 54 लाख रुपए से अधिक की मूंग, उड़द, सोयाबीन एवं मूंगफली की खरीद की जा चुकी है।

किसानों को खरीद की राशि का ऑनलाईन भुगतान किया जा रहा है और 13 हजार 400 किसानों के खातों में 111 करोड़ 58 लाख रुपए से अधिक की राशि को ऑनलाईन ट्रांसफर कर लाभान्वित किया जा चुका है। प्रमुख शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार, सहकारिता अभय कुमार ने बताया कि समर्थन मूल्य पर कृषि उपज को बेचने के लिए ऑनलाईन पंजीयन व्यवस्था को किसानों द्वारा सराहा जा रहा है और अब तक 2 लाख 16 हजार 135 किसानों द्वारा पंजीयन करवाया है। लगभग 1 लाख 10 हजार किसानों को दिनांक आवंटित कर दी गई हैं। उदयपुर संभाग में समर्थन मूल्य पर की जा रही खरीद की समीक्षा करते हुए उन्होंने बताया कि सोयाबीन के लिए 5 केन्द्र प्रतापगढ़, निम्बाहेड़ा, छोटी सादड़ी, बांसवाड़ा एवं बागीदोरा, उड़द के लिए 3 केन्द्र प्रतापगढ़, निम्बाहेड़ा एवं बड़ी सादड़ी एवं मूंगफली के लिए 1 केन्द्र फतहनगर बनाया गया है। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि संभाग के किसानों के लिए यह सुनहरा अवसर है कि परोपकारी राज्य सरकार की किसान हित संरक्षण की नीति के तहत संभाग में इन केन्द्रों को बनाया गया है। इसलिए अधिक से अधिक किसानों को इन केन्द्रों पर अपनी उपज को बेचने के लिए लाना चाहिए ताकि उन्हें अपनी गाढ़े पसीने से उपजाई दलहन एवं तिलहन का उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

ऑलिटिया फूड्स कंपनी और किसानों के बीच एमओयू

..ऑलिटिया खरीदेगी किसानों से 51 रूपये में जैतून की पत्तियां

जयपुर (कासं)। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी की उपस्थिति में पंत कृषि भवन में जैतून चाय उत्पादक कंपनी ऑलिटिया फूड्स और जैतून उत्पादक किसान समूह राजू देवी चांडक प्रोपराइटर के बीच जैतून की पत्तियों की खरीद के लिए एमओयू हस्ताक्षरित हुआ। एमओयू के अनुसार कंपनी आगामी 20 वर्षों तक किसानों के इस समूह से 51 रूपये प्रति किलो की दर से जैतून पत्तियों का क्रय करेगी और प्रति वर्ष इस दर में 10 फीसदी की बढ़ोत्तरी होगी। यह इस तरह का देश का पहला एमओयू है। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने बताया कि विश्व में पहली बार जैतून प्रसंस्कृत चाय की स्थापना बस्सी, जयपुर में हुई है। यहां जितनी चाय का उत्पादन हो रहा है, उसे कहीं ज्यादा मांग विभिन्न देशों से आ रही है। जैतून उत्पादक किसानों का अभी तक फल ही बिक रहा था, लेकिन अब पत्तियां भी बिकने भी लगी है, जिससे उन्हें ज्यादा लाभ होगा। उन्होंने बताया कि जैतून की चाय में कई तरह के औषधीय गुण पाए जाते हैं और इसका सेवन 12 तरह के कैंसर को रोकने के लिए लाभप्रद है। सैनी ने बताया कि राज्य के कई हिस्सों में दार्जलिंग और आसाम के चाय बागानों की तरह जैतून बागान लगाए जाएंगे। अभी राज्य के 5 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में जैतून का पौधारोपण किया गया है। इसके विस्तार के प्रयास किए जा रहे हैं। जिन जिलों में जैतून पौधारोपण के लिए अनुदान दिया जा रहा है, वहां के अधिकारियों से हर माह प्रगति रिपोर्ट मंगवाई जाएगी। उन्होंने राज्य में पहली बार जैतून उत्पादक किसानों के एसोसिएशन बनने पर बधाई दी। सैनी ने बताया कि राज्य के प्रगतिशील किसानों की सेवाएं कृषि विशेषज्ञ के रूप में ली जाएंगी और उन्हें मानदेय दिया जाएगा।

रबी में गेहूं का रकबा घटाया, सरसों का बढ़ाया, दालें भी कम होंगी

जयपुर (कासं)। सरकार ने इस बार प्रदेश में रबी फसल के लिए तय किए बुआई लक्ष्यों में गेहूं का रकबा करीब डेढ़ लाख हैक्टेयर घटा दिया है। वहीं सरसों का रकबा एक लाख हैक्टेयर बढ़ाया गया है। रबी की दालों का रकबा 71 हजार हैक्टेयर कम किया गया है। प्रदेश में इस बार 94 लाख हैक्टेयर में रबी फसलों की बुआई तय की गई है। पिछले साल 93 लाख 60 हजार हैक्टेयर में रबी की बुआई हुई थी। राज्य में पिछले पांच साल के दौरान औसतन 92 लाख 50 हजार हैक्टेयर में रबी की बुआई हुई है। इस साल रबी की बुआई शुरू हो चुकी है। अभी खासतौर से सरसों चने की बुआई हुई है। गेहूं की बुआई नवंबर में शुरू होगी। इस बार प्रदेश के एक दर्जन से ज्यादा जिलों में पर्याप्त बारिश नहीं होने से जमीन में नमी की कमी है। इससे बुआई धीमी गति से चल रही है। कृषि मुख्यालय पर प्रदेशभर से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार, 16 अक्टूबर तक 3 लाख 37 हजार 400 हैक्टेयर में रबी फसलों की बुआई हो चुकी थी। इसमें 2 लाख 69 हजार हैक्टेयर में सरसों 41 हजार हैक्टेयर में चने की बुआई हुई है। पिछले साल इस अवधि में प्रदेश में 2 लाख 86 हजार हैक्टेयर में रबी की फसलें बोई गई थी।

सम्पादकीय

कृषि निर्यात के लिए मजबूत नीति जरूरी

पिछले तीन वर्षों के दौरान कृषि निर्यात में भारी गिरावट से चिंतित कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण (एपीडा) ने सरकार से एक मजबूत नीति के साथ सालाना कृषि उपज का 10-20 प्रतिशत हिस्सा निर्यात के लिए निर्धारित करने का अनुरोध किया है। सरकारी नीति में बार बार बदलाव किए जाने की वजह से एपीडा में पंजीकृत उत्पादों के निर्यात में भारी गिरावट दर्ज की गई है। सरकार के स्वामित्व वाले एपीडा के आंकड़ों में कहा गया है कि भारत का कुल कृषि एवं प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात वित्त वर्ष 2016-17 के लिए 22 फीसदी तक घटकर 33.4 अरब डॉलर रह गया जबकि वित्त वर्ष 2013-14 के दौरान यह 42.9 अरब डॉलर था। चावल, दाल, गेहूं, चीनी आदि जैसी जरूरी जिंसों के संदर्भ में सरकारी नीतियों में बार बार बदलाव देखे गए हैं और जहां कुछ उत्पादों के निर्यात पर प्रतिबंध लगाया गया वहीं कुछ पर शुल्क को कम या ज्यादा किया गया। कृषि जलवायु स्थिति और उत्पादन के आधार पर भारत सरकार घरेलू जरूरतों को ध्यान में रखकर कृषि निर्यात नीति में बदलाव करती है। हालांकि इन बदलावों ने भारत को वैश्विक आयातकों के लिए कृषि उपज का अनियमित आपूर्तिकर्ता बना दिया है। निर्यात नीति में बार बार बदलाव और न्यूनतम निर्यात कीमत (एमईपी) के लागू होने की वजह से भारत को कृषि जिंसों का भरोसेमंद आपूर्तिकर्ता नहीं समझा जा सकता है। इसलिए, इसके लिए एक उपयुक्त और मजबूत निर्यात नीति की जरूरत है जिससे किसी सीजन में जिंसों के उत्पादन के 10-20 फीसदी के निर्यात प्रभावित न हो। शेष मात्रा घरेलू बाजार के लिए उपलब्ध होगी। महज 2.2 फीसदी की भागीदारी के साथ भारत वैश्विक कृषि व्यापार में 9वें पायदान पर है जिसके बाद अमेरिका (10.4 प्रतिशत), यूरोपीय संघ (10 प्रतिशत), ब्राजील (5.1 प्रतिशत) जैसे नाम शामिल हैं। भारत कृषि उत्पादों की गुणवत्ता को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाकर अपने निर्यात को बढ़ाने की व्यापक क्षमता से संपन्न है। कृषिगत उत्पादों के निर्यात का कृषि सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में लगभग 13.10 प्रतिशत का योगदान है। यही वजह है कि इसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर व्यापक असर है। जहां भारत ने कृषिगत जिंसों की संख्या के संदर्भ में स्वयं को घाटे से अधिशेष वाले देश के रूप में स्थापित किया है वहीं परिवहन, विपणन और सक्षम बाजार पहुंच के संदर्भ में चुनौतियां लगातार विकास की रफ्तार को प्रभावित कर रही हैं। एक मजबूत निर्यात बाजार को भरोसेमंद आपूर्तिकर्ता की जरूरत होती है। यदि सही कृषि अनुमान तकनीक हो और हम किसी बफर स्टॉक का बेहतर अनुमान लगाने में सक्षम हों तो निश्चित रूप से कृषि निर्यात के लिए मध्यावधि नीति बनाई जा सकती है। इसलिए, हमें फसल उत्पादन, बफर स्टॉक, भविष्य के अनुमान और घरेलू मांग के वैज्ञानिक अनुमान पर आधारित एक भरोसेमंद कृषि नीति की जरूरत है। यदि भविष्य के अनुमान गलत साबित होते हैं तो आयात के लिए विकल्प खुला रखा जाना चाहिए। वर्ष 2000 के आंकड़ों से संकेत मिलता है कि निर्यात में शानदार तेजी आई है। प्रत्येक पांच साल में निर्यात लगभग दोगुना हुआ है। हालांकि मौजूदा समय में 2013-14 के संदर्भ में निर्यात घटा है। इस रुझान को समाप्त किए जाने की जरूरत होगी। अगले पांच साल में निर्यात को मौजूदा स्तर से दोगुना करना आसान नहीं होगा। इसलिए, अगले पांच साल (2017-18 से 2021-22 की अवधि) के लिए एक मजबूत और सुनियोजित प्रोत्साहन रणनीति बनाने की जरूरत होगी।

गाजर की उन्नत खेती

शीशपाल चौधरी एवं महेन्द्र चौधरी
विद्यावाचस्पति शोध छात्र, श्रीकर्ण नरेंद्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर- 303329

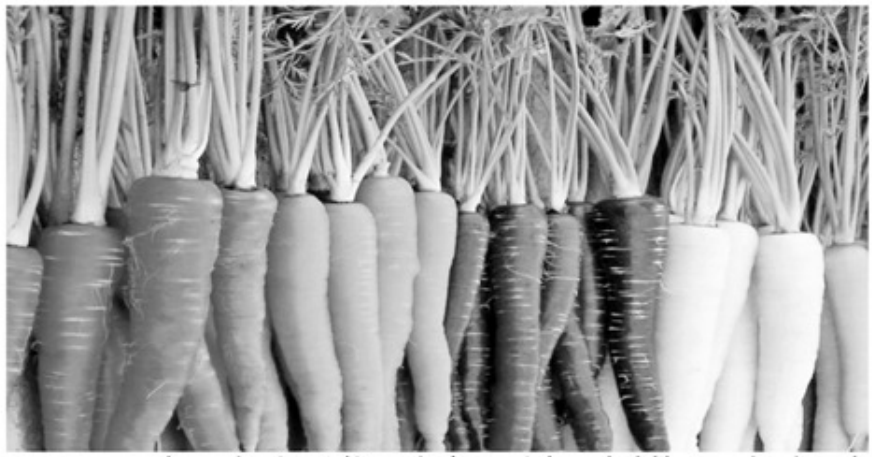

गाजर एक महत्वपूर्ण जड़ वाली स्वादिष्ट एवं पौष्टिक सब्जी है। इसकी खेती पूरे देश में की जाती है। इसकी जडें, सब्जी, सलाद, अचार, मुरब्बा एवं हलवा आदि में प्रयोग की जाती हैं। इसकी मुलायम पत्तियों का साग बनाकर प्रयोग किया जाता है। गाजर में विटामिन 'ए' प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

जलवायु: गाजर ठण्डे मौसम की फसल है। अच्छे रंग एवं अच्छे आकार के लिए 18-240 सेल्सियस तापमान उपयुक्त रहता है।

भूमि एवं उसकी तैयारी: गाजर की अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए अच्छे जल निकास वाली, गहरी, भुरभुरी बुलई दुमट मिट्टी उपयुक्त रहती है। मिट्टी को भुरभुरी बनाने के लिए खेत में 2 जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से व 3-4 जुताई देशी हल से करके पाटा लगायें।

उन्नत किस्में: नैन्टिस, पूसा केसर, चेन्टनी, पूसा यमदागिनी, पूसा मेघाली व अर्का सुराज।

बीज की मात्रा: गाजर के लिए 5-6 किलो बीज प्रति हैक्टयर पर्याप्त होती है।

बुवाई का समय एवं विधि: गाजर की बुवाई मध्यम अगस्त से नवम्बर के अन्तिम सप्ताह तक की जा सकती है। इसके बीजों की बुवाई समतल क्यारियों में अथवा मेढों पर की जाती है। पौधे से पौधे की दूरी 8-10 सेन्टीमीटर तथा कतार से कतार की दूरी 30 सेन्टीमीटर रखें व बीज 1 सेन्टीमीटर गहरा बोना चाहियें।

खाद एवं उर्वरक: अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 250 क्विंटल प्रति हैक्टयर की दर से भूमि में मिलावें। 60 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलो फॉस्फोरस एवं 120 किलो पोटाश मात्रा बुवाई के समय प्रति हैक्टयर खेत में देंवे। नत्रजन की आधी मात्रा खेत की तैयारी के समय व आधी मात्रा बुवाई के 45 दिन बाद खड़ी फसल में देंवे।

सिंचाई: गाजर की फसल में 5-6 सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल में पहली सिंचाई बीज बोने के तुरन्त बाद करनी चाहिए व बीज उगने तक भूमी में पर्याप्त नमी बनी रहनी चाहिये।

खरपतवार नियंत्रण: खरपतवार की रोकथाम हेतु 2-3 बार निड़ाई गुड़ाई करें व पौधों की छंटाई करें ताकि जड़े अच्छी बन सकें। बुवाई के लगभग 4 सप्ताह बाद मिट्टी चढा दें।

कीट एवं रोग:

कीट: गाजर की फसल को पत्ती का टिड्डा एवं गाजर की वीविल मुख्य रूप से नुकसान पहुंचाते हैं। इनकी रोकथाम के लिए मैलाथियान 0.05 प्रतिशत घोल का फसल पर छिड़काव करें।

रोग:

छाछ्या रोग: इस रोग से प्रभावित पौधे की पत्तियों व तनो पर सफेद छोटे-छोटे धब्बे पड़ जाते हैं व बाद में पूरे पौधे पर फैल जाते हैं। इसकी रोकथाम के लिए कैराथियान एल.सी. 1 मिली लीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

पत्ती धब्बा रोग: इस रोग से ग्रसित पत्तियों पर गोल पीले धब्बे पड़ जाते हैं व इसके कारण पत्तियां झुलस जाती हैं। इस फफूंदजनक रोग की रोकथाम के लिए मेन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से पौधों पर छिड़के।

खुदाई: जब जड़ें पूर्ण आकार की हो जाती है तो उनकी खुदाई करते हैं। सामान्यतया गाजर की जड़ें 100-130 दिनों में खुदाई के लिए तैयार हो जाती हैं।

वर्षभर हरा चारे के लिये रिंजका की खेती

शीशपालचौधरी एवं डॉ.ए.सी.शिवरान
विद्यावाचस्पति शोध छात्र,शस्य विज्ञान विभाग,श्रीकर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर- 303329
आचार्य, शस्य विज्ञान विभाग,श्रीकर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर-303329

रिंजका पशुओं के लिए पोष्टिक और लाभदायक चारे की फसल है। इसमे 20-25 प्रतिशत प्रोटीन की मात्रा होती है जिसकी पाचनशीलता लगभग 65-70 प्रतिशत तक होती है। इसमे 1.5 प्रतिशत कैल्श्यिम, 0.3प्रतिशत फॉस्फोरस एवं विटामिन ए,बी व डी की भी प्रचुरता होती हैं। यह रबी में उगाई जाने वाली एक बहुवर्षीय फलीदार चारे की सिंचित फसल हैं जो एक बार बोने पर लगभग एक से तीन वर्ष तक उपज देती है। दलहनी फसल होने के कारण इससे मृदा की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती हैं। इसके चारे से साइलेज भी बनाया जाता हैं।

भूमि व खेत की तैयारी:रिंजका के लिए उचित जल निकास वाली दोमट मृदा सर्वोतम रहती हैं। मृदा का पी.एच.मान 6.5-7.5 इसके लिए अधिक उपयुक्त रहता हैं। खेत की तैयारी के लिए मिट्टी पलटने वाले हल से एक गहरी जुताई करके 3-4 जुताई या देशी हल या हेरो चलाकर करनी चाहिए। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा चलाना चाहिए जिससे ढेले टूट जाये व खेत समतल हो जाये।

उन्नतकिस्मे:-

एक वर्षीय किस्मे: आनन्द-2,एल. एल. सी.-3 व सिरसाटाइप-8,

बहुवर्षीय किस्मे: टाइप-9, आर.एल.-88 व सिरसा टाइप-9

बीजउपचार: रिजके के बीजो को राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए।

बीज दर:-रिंजका की फसल के लिये छिटकवा विधि से बुवाई करने के लिए 20-25 किलो ग्राम बीज की प्रति हैक्टर आवश्यकता होती हैं तथा कतारों में बुवाई करने पर 15 किलो ग्राम बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त रहता हैं।

बुवाई का समय: रिंजका की बुवाई का उपयुक्त समय अक्टूबर से मध्य नवम्बर हैं।

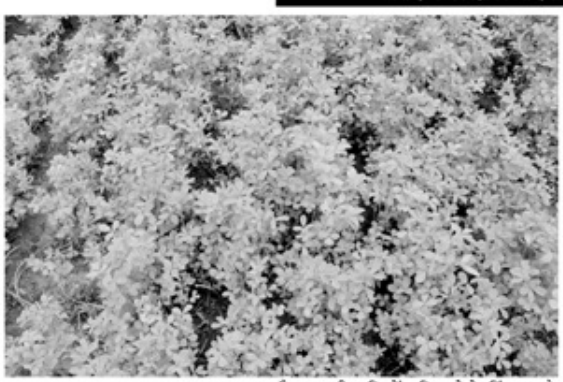

जैविक खाद एवं भूमि उपचार: अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 20 से 25 टन प्रति हेक्टेयर की दर से बुवाई के करीब एक माह पूर्व खेत में डालकर अच्छी तरह मिला दें।

निड़ाई-गुड़ाई एवं खरपतवार नियन्त्रण:रिंजके के अंकुरण के पश्चात निड़ाई कर खरपतवारों को निकाल लेना चाहिए। कतारों में बोई गई फसलमेंवर्षा ऋतु व उसके बाद 2-3 निड़ाई गुड़ाई करना लाभदायक रहता हैं। परजीवी अमरबेल रिंजका फसल का मुख्य खरपतवार है। इसकी पत्तियों रहित बेले रिंजका के पौधों से लिपटकर बढ़ती रहती हैं। अंकुरण के 10 से 15 दिन बाद इसकी जड़े रिंजका के तने में घुसकर भोजन प्राप्त करती हैं जिससे रिंजका के पौधे कमजोर होकर नष्ट हो जाते हैं।

अमरबेल खरपतवार का नियन्त्रण:

खरपतवार बीजों से मुफ्त उन्नत बीज का प्रयोग करना

-फसल चक्र अपनाना चाहिए।

-अमरबेल के पौधों को बीज अवस्था से पूर्व उखाड़कर जला देना चाहिए।

अमरबेल प्रभावित हिस्सो में 0.1 प्रतिशत पैराक्वाट शाकनाशी के घोल का छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई: फसल में पहली सिंचाई बीज की बुवाई के शीघ्र पश्चात ही की जानी चाहिए इसके पश्चात् ग्रीष्मकाल में 10-12 दिन के अन्तर पर और सर्दियों के दिनों में 20 से 25 दिन के अन्तरपर फसल में सिंचाई करते हैं।

पादप संरक्षण:

मृदुरोमिल आसिता रोग: इसरोग का प्रकोप शरद ऋतु में अधिक नमी की अवस्था में होता हैं। पत्तियां खराब हो जाती है। रोग का संक्रमण होना प्रारम्भ हो 0.2 प्रतिशत मैन्कोजेब के घोल का छिड़काव 10 से 15 दिन के अन्तराल पर 2 से 3 बार करें।

मोयला:-इस कीट का प्रकोप मार्च-अप्रेल में होता हैं। इस कीट की रोकथाम के लिए सवा लीटर मैलाथियान 50 ई.सी. का प्रति हैक्टेयर की दर से छिकाव करें।

कटाई: पहली कटाई बुवाई के 55-60 दिन बाद तथा इसके बाद अगली कटाईयां 25-30 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए।

उपज: रिंजका की 7 से 9 कटाईयों में 700-1000 क्विंटल हरा चारा प्रति हैक्टेयर प्राप्त किया जा सकता है।

मरू क्षैत्र में सौंफ की उन्नत खेती

वीरपाल चौधरी, शिवप्रसाद दरोगा एवं महेन्द्र चौधरी
1 व 3 विद्यावाचस्पति तृतीय छात्र, श्रीकर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर- 303329
2स्नातकोत्तर छात्र, जुनागढ कृषि विश्वविद्यालय, जुनागढ-362001

सौंफ का उपयोग मसाले एवं औषधि के रूप में किया जाता हैं। सौंफ के मधुर स्वाद व सुगन्ध का आधार इसके तेल में निहित एनीथोल व फ्रेंकोन नामक तत्व के कारण होती है। सौंफ के दाने या पीसकर अचार,सॉस, चॉकलेट आदि भोज्य पदार्थो में उपयोग किया जाता हैं।

जलवायु : सौंफकी खेती के लिए शुष्क व ठण्डा मौसम उपयुक्त रहता हैं। जनवरी व फरवरी माह में शुष्क व सर्द वातावरण इसकी उपज व गुणवत्ता में वृद्धि करता है। फूल आने के समय लम्बी अवधि तक बादल या अधिक नमी से इस फसल में बीमारियों का प्रकोप बढ़ जाता हैं।

भूमि व खेत की तैयारी: सौंफ की खेती के लिए जीवांश युक्त दोमट मृदा जिसमें जल निकास की पर्याप्त सुविधा हो उपयुक्त रहती हैं। खेत की 3-4 बार जुताई करके 15-20 से.मी. गहराई तक मिट्टी को मुलायम व भुरभरी कर लेनी चाहिए। जुताई के पश्चात् पाटा चलाकर आवश्यकतानुसार क्यारियां बना लें।

उन्नत किस्में: जी एफ1, पी एफ35, को 1, एस 7-9, आर एफ101, सलेक्शन 16 इत्यादि।

बीज दर व बीजोउपचार: सौंफकी सीधी बुवाई हेतु 8-10 कि.ग्रा. व रोपण विधि से बुवाई करने पर 3-4 कि.ग्रा. बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त हैं। बीजों को बुवाई से पूर्व 2 ग्राम कार्बेण्डाजिम या 3 ग्राम थायरम से प्रति किलो ग्राम बीज दर से उपचारित करना चाहिए।

बुवाई का समय व विधि : सौंफ की बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक कर देनी चाहिए। रोपण विधि से बुवाई करने पर जुलाई-अगस्त में नर्सरी तैयार करते हैं तथा 45-60 दिन बाद खेत में रोपण करते हैं। कतारो में बुवाई करने हेतु क्यारियों में 45-60 सें.मी. दूरी पर कतार बनाकर उनमें निर्धारित मात्रा में बीज डालकर मिट्टी से ढक देते हैं।

खाद एवं उर्वरक: बुवाई के 3-4 सप्ताह पूर्व 8-10 टन प्रति हैक्टर अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद का प्रयोग करे। फसल में 90 किलो नाइट्रोजन व 40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस प्रति हैक्टयर की दर से डालना चाहिए। नाइट्रोजन की आधी मात्रा व फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय उरकर देवें तथा शेष नाइट्रोजन सिंचाई के साथ देना चाहिये।

सिंचाई : पहली हल्की सिंचाई बुवाई के तुरन्त बाद की जाती है। इस सिंचाई के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि क्यारी में पानी का बहाव अधिक तेज न हो, दूसरी सिंचाई के 8-10 दिन बाद जब बीजों का अंकुरण होने लगे उस समय करनी चाहिए। भूमि के प्रकार व मौसम के अनुसार 20-25 दिन के अन्तराल पर 6-7 सिंचाईयां पर्याप्त रहती हैं।

प्रमुख रोग व नियंत्रण उपाय:

गमोसिस या गुन्दियारोग: इस रोग का आक्रमण पुष्पक्रमों पर होता तथा पुष्प क्रम से चिपचिपा या गुन्दिया पदार्थ निकलता है। इस रोग से बचाव के लिए उचित शस्य क्रियाएं अपनानी चाहिए।

जड़ एव तना गलन: इस रोग के प्रकोप से तना नीचे से मुलायम हो जाता है व जड़ गल जाती है। रोग नियंत्रण हेतु बीजों की बुवाई से पूर्व कार्बण्डाजिम या केप्टान 2 से 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित कर बुवाई करे।

रेमूलेरिया ब्लाईट: रोग बुवाई के 60 से 80 दिन बाद नीचे की पत्तियों पर कोणीय धब्बों के साथ उभरता है। रोग नियंत्रण हेतु 0.2 प्रतिशत मेन्कोजेब अथवा 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सीकलोराइड अथवा 0.1 प्रतिशत कार्बण्डाजिम के घोल का छिड़काव रोग के लक्षण दिखाई देते ही करे। 10 से 15 दिन के अन्तराल से आवश्यकतानुसार एक या दो बार छिड़काव दोहराये ।

प्रमुख कीट व नियंत्रण उपाय:

चैपा/माहू: इस कीट का आक्रमण फसल में फूल आने के समय से प्रारम्भ होता हैं। इस कीट से प्रभावित पौधे कमजोर हो जाते हैं तथा उन पर इस कीट द्वारा मीठा पदार्थ छोड़ने से काली फफूंद पनप जाती हैं। फलस्वरूप पत्तियां सिकुड़ कर मुड़ जाती हैं। इस कीट का नियंत्रण के लिये कीट का प्रकोप प्रारम्भ होते ही डाइमिथोएट 0.03 प्रतिशत या मेलाथियान 0.3 प्रतिशत घोल का छिड़काव करना चाहिए।

पर्ण जीवी एवं बरूथी : थ्रिप्स कीट बहुत छोटे होते हैं तथा कोमल व नई पत्तियों से हरा पदार्थ खाते हैं। बरूथी पत्तियों का रस चूसता हैं। इस कीट की रोकथाम के लिए सवा लीटर मैलाथियान 50 ई.सी. का प्रति हैक्टर की दर से छिकाव करें।

उपज : सौंफ की उपज 18-20 क्विंटल प्रति हैक्टर तक प्राप्त की जा सकती हैं।

खरीफ संवत 2016-17 में काश्तकारों को दी 543 करोड़ रुपये की अनुदान राशि

जयपुर (कासं)। आपदा, प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा मंत्री गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि राज्य सरकार ने खरीफ संवत 2073 (वर्ष 2016-17) में प्रदेश के 13 प्रभावित जिलों के काश्तकारों को बजट उपलब्धतानुसार 543 करोड़ रुपये की राशि कृषि आदान अनुदान सब्सिडी जिला कलक्टरों को आवंटित कर दी गई हैं। कटारिया शासन सचिवालय स्थित अपने कक्ष में आपदा प्रबंधन एवं सहायता विभाग की मासिक समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के प्रभावित काश्तकारों को गत तीन वर्षों में लगभग 6 हजार करोड़ रुपये का कृषि आदान अनुदान उपलब्ध कराया गया है। आपदा, प्रबंधन, सहायता एवं नागरिक सुरक्षा मंत्री ने कहा कि इसी प्रकार खरीफ संवत 2073 वर्ष 2017 में पशु संरक्षण गतिविधियों एवं पशु शिविरों को 148 करोड़ रुपये की सहायता राशि जिला कलक्टरों के माध्यम से आवंटित की गई है। उन्होंने बताया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के लिये भी राज्य सरकार ने सड़कों की मरम्मत एवं पुनर्स्थापना के लिये जिला कलक्टरों के माध्यम से सार्वजनिक निर्माण विभाग के लिये 90 करोड़ रुपये की राशि आवंटित की गई है।

सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी के कारण होने वाले लक्षण और उनका उपचार

बिमला विद्यावाचस्पति पादप रोग विज्ञान, आर.ए.आर.आई, दुर्गापुरा, जयपुर

सूक्ष्म पोषक तत्व - सूक्ष्म पोषक तत्व वे तत्व होने है, जिनकी आवश्यकता फसल को बहुत कम मात्रा में होती है, परन्तु इनकी कमी होने पर फसल की उपज, उत्पादन और उसकी गुणवत्ता में कमी आती है।

सूक्ष्म पोषक तत्वो की कमी से प्रमुख (विकार) लक्षण।

लोहा की कमी के कारण -

धान: धान की नर्सरी में लोहे की कमी से उपरी पत्तियाँ पीली या सफेद होने लगती है।

सोयाबीन: नई पत्तियों में शिराओं के बीच कर हिस्सा पीला पड़ता है, जबकि शिराओं के किनारे का भाग हरा बना रहता है तथा अधिक कमी होने पर पत्तियाँ सफेद पड़ जाती है।

गन्ना: लोहे की कमी से गन्ने की नई पत्तियाँ सफेद पड़ जाती है।

उपचार: 10 ग्राम फेरस, सल्फेट प्रति लीटर मिश्रण का छिड़काव करना चाहिये।

मोलीब्डेनम कमी के कारण:

फूलगोभी: पत्तियों के आधार के पास पीलापन दिखाई देता है, और धीरे-धीरे मध्यक्षेत्र के दोनों ओर का भाग मृत हो जाता है, और केवल पत्ती के शीर्ष भाग पर ही हरा बचता है।

दलहनी फसले: इनमें जड़ों में प्रभावी ग्रन्थियां नहीं बनती और बढ़वार समुचित नहीं होती है।

सोयाबीन : पत्तियों की शिराओं के बीच का भाग पीला पड़ जाता है, जड़ों की गुन्थियाँ सख्या में ज्यादा व छोटी बनती है, जिनका रंग हल्का पीला हो जाता है।

उपचार: खड़ी फसल में अमोनियम मोलीब्डेट 2 ग्राम प्रतिलीटर का छिड़काव करना चाहिए।

बोरोन कमी के कारण

फूलगोभी : फूल छोटा और देर से बनता है तना खोखला व भूरा हो जाता है।

गन्ना: नई पत्तियों में शिराओं के बीच अर्ध पारदर्शी धब्बे बनते है और नई पत्तियाँ सूखने लगती है।

आलू : पौधा झाड़ीनुमा हो जाता है, पत्तियाँ मोटी और ऊपर की तरफ मुड़ जाती है, आलू के कन्द फटने लग जाते है और आकार छोटा हो जाता है।

सेब : कच्चे फल गिरने लग जाते है तथा फलों के अन्दर का भाग भूरा पड़ जाता है

मक्का : मक्का में नई पत्तियों पर सफेद लम्बे धब्बे बनते हैं जो बाद में जुड़कर लम्बी धारी बना लेते है, तथा भूट्टे में दाने नहीं बनाते है।

धान : नई पत्तियाँ पीली पड़ जाती है।

उपचार : मृदा में 10 किग्रा बोरेक्स प्रति हेक्टेयर प्रयोग करना चाहिये तथा खड़ी फसल में 2 ग्राम बोरेक्स प्रतिलीटर घोल का छिड़काव करना चाहिये।

मैग्नेशियम कमी के कारण

गन्ना : गन्ने की पत्तियों की शिराओं के बीच का भाग पीला पड़ने लगता है।

गेहूँ : पत्तियों पर धूसर सफेद धारीदार धब्बे बन जाते है।

उपचार : 25 किलो मैग्निज सल्फेट प्रति हेक्टर का प्रयोग बुवाई से पहले करना चाहिये। तथा 5 ग्राम मैग्निज सल्फेट और 21.2 ग्राम चूना 1 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिये।

जस्ता कमी के कारण

धान : धान की नर्सरी की पत्तियों पर छोटे-छोटे कत्थई रंग के धब्बे बन जाते है तथा रोपाई के 11-15 दिन के बाद जस्ते की कमी आने पर पौधे की तीसरी पत्ती का रंग हल्का पीला पड़ने लगता है।

गेहूँ : जस्ते की कमी होने पर पौधों की पत्तियों पर पीली धारीयाँ बनती है।

टमाटर : पत्तियों का आकार छोटा होता है। और शिराओं के बीच का भाग हल्का पीला पड़ जाता है।

उपचार : जस्ते की कमी को दूर करने के लिये जिंक सल्फेट 25 किलो ग्राम बुलई मिट्टी में प्रति हेक्टर के हिसाब से प्रयोग करना चाहिये।

ताँबा कमी के कारण

धान की नई पत्तियों का कुम्हलाना

अमरूद: फलों पर भूरे कत्थई धब्बे पड़ना।

नींबू : सफेद धब्बे बनना व गोंद का जमना

उपचार : 4-5 किलोग्राम कोपर सल्फेट प्रति हेक्टर मृदा में प्रयोग करना बुनवाई से पूर्व तथ खड़ी फसल में 2.5 ग्राम कॉपर सल्फेट और 1.25 ग्राम चूना प्रति लीटर के मिश्रण का छिड़काव करना चाहिये।

ऊंटनी का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए वरदान : सैनी

जयपुर (कासं)। पशुपालन मंत्री डॉ. प्रभुलाल सैनी ने कहा कि ऊंटनी का दूध मानव स्वास्थ्य के लिए वरदान है। इसमें पाए जाने अनेक औषधीय गुणों की वजह से यह कई गंभीर बीमारियों के इलाज के लिए मददगार सिद्ध हो सकता है। सैनी ने कहा देश का 81 फीसदी ऊंट राजस्थान में ही पाया जाता है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में इसकी संख्या में भारी कमी आई है। राज्य सरकार द्वारा ऊंट को बचाने के लिए इसे राज्य पशु घोषित किया गया है और एक अलग से अधिनियम भी बनाया गया है।

पशुपालन मंत्री ने कहा कि ऊंट पर अनुसंधान जारी है और इसे किस तरह उपयोगी और लाभप्रद बनाया जाए, इसके प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा उदयपुर में 7 से 9 नवंबर तक ग्लोबल राजस्थान एग्रोटेक मीट का आयोजन किया जा रहा है, अगर कोई ऊंट के दूध या अन्य उत्पादों के लिए एमओयू करना चाहता है, तो वो इस कार्यक्रम में आ सकते हैं। इस कार्यक्रम में ऊंटों के विभिन्न उत्पादों को भी प्रदर्शित किया जाएगा। डॉ. सैनी ने कहा कि ऑटिज्म चिंताजनक बीमारी है, लेकिन इसके निदान के लिए अभी और शोध की आवश्यकता है। उन्होंने ऊंटनी के दूध पर शोध कर रही अमरीकी की क्रिस्टना को इस कार्य के लिए बधाई दी।

उन्होंने कहा कि ऊंटनी के दूध को निकालना और इसे संरक्षित करना, चुनौतिपूर्ण कार्य है। इसका स्वाद कड़वा होने की वजह से, यह अधिक लोकप्रिय नहीं हैं, लेकिन इसका सेवन मानव स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद साबित हो सकता है।

कार्यक्रम में विधायक विद्याशंकर नंदवाना, पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. अजय कुमार गुप्ता, बीकानेर मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. आरपी अग्रवाल सहित बड़ी संख्या में गणमान्य लोग मौजूद थे।

किसान नंदलाल द्वारा नारियल के बुरादे का उपयोग कर कर रहे मृदा रहित खेती

उदयपुर (विसं)। उदयपुर जिले में तहसील-वल्लभनगर के ग्राम-महाराज की खेड़ी के कृषक नंदलाल डांगी द्वारा पॉली हाऊस में सफलतापूर्वक कोको पीट (नारियल के बुरादे) का उपयोग करते हुए मृदा रहित खेती की जा रही है। नंदलाल ने 2 एकड़ भूमि पर संरक्षित खेती हेतु तीन पॉली हाऊस की स्थापना वर्ष 2013 में करवाई और स्थानीय कृषि एवं उद्यान विभाग के मार्गदर्शन में इन पॉली हाऊस में खीरा, टमाटर व शिमला मिर्च की खेती आरम्भ की। लेकिन कुछ समय बाद ही जब टमाटर व खीरा की नई फसल भूमि सूत्र कृमि (निमेटोड़) से बुरी तरह ग्रसित हुई तो उन्हें ज्ञात हुआ कि कोकोपीट (नारियल के बुरादे) में खेती करने से सूत्र कृमि की समस्या नहीं आती। डांगी ने गुजरात के एक कन्सलटेन्ट की सेवाएं ली वहां से करीब 10 लाख रूपए की कोकोपीट क्रय की। इस कोकोपीट को 5-5 किलोग्राम की प्लास्टिक की थैलियों में भरकर कुल 13,000 थैलियों में बीजा रोपण कर उन्होंने एक एकड़ पॉली हाऊस क्षेत्र में खीरे की खेती आरम्भ की। इन पौधों का पोषण पूर्ण रूप से फर्टिगेशन विधि द्वारा बूंद-बूंद सिंचाई प्रणाली से किया गया और विभिन्न प्रकार के सॉल्ट की व्यवस्था की गई ताकि पौधों को समस्त 16 तत्वों से पोषित किया जा सके। प्रत्येक कोकोपीट भरी थैली में बीजों का अच्छा अंकुरण पश्चात् पौधों ने अच्छी बढ़वार की और जब बुवाई के करीब 45 दिवस पश्चात् फूल आने लगे व खीरे लगने लगे। यह फसल पूर्ण रूप से तंदुरस्त व सूत्र कृमि प्रकोप रहित थी।

'ग्राम' उदयपुर के स्मार्ट फार्म में होंगे नए आकर्षण

जयपुर (कासं)। उदयपुर में होने वाले आगामी तीन दिवसीय ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट (ग्राम) के स्मार्ट फार्म में किसानों को नए आकर्षण देखने को मिलेंगे। स्मार्ट फार्म में फोरेस्ट प्रोडक्ट, हाइब्रिड मक्का के बीज उत्पादन की तकनीक, पर्ल कल्चर, सोयाबीन के प्रोसेस्ड खाद्य उत्पाद, 'आर्गेनिक डूंगरपुर' और मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान (एमजेएसए) के बारे में बताया जायेगा। यह जानकारी राजस्थान की प्रमुख शासन सचिव, कृषि, श्रीमती नीलकमल दरबारी ने दी। 'ग्राम' उदयपुर का आयोजन राजस्थान सरकार और फैडरेशन ऑफ इंडियन चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज (फिक्की) की ओर से उदयपुर के महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में 7 से 9 नवम्बर तक किया जाएगा। श्रीमती दरबारी ने आगे बताया कि 1200 वर्गमीटर क्षेत्र में फैला स्मार्ट फार्म 'कृषि आय दोगुना करने' की थीम पर आधारित होगा। यहां राजस्थान सरकार की विभिन्न रणनीतियों को प्रदर्शित किया जायेगा। इन रणनीतियों में 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप' (बूंद-बूंद सिंचाई, जल संरक्षण और एमजेएसए के माध्यम से), मृदा स्वास्थ्य (मृदा जांच प्रयोगशालाओं, मृदा स्वास्थ्य कार्ड और आर्गेनिक खेती के माध्यम से), कटाई पश्चात् कम नुकसान और मूल्य संवर्धन (प्रोसेसिंग तकनीक और विभिन्न फसलों से प्राप्त उत्पादों के माध्यम से), ई-नाम के माध्यम से नेशनल फार्म मार्केटिंग (इलेक्ट्रोनिक-नेशनल एग्रीकल्चर मार्केट के जरिए) और अन्य सहायक कृषि गतिविधियों (डेयरी, मधुमक्खी पालन, मछली पालन, मशरूम उत्पादन और पशुपालन के माध्यम से) शामिल है।

राजस्थान सिंचाई प्रणाली के प्रबंध में कृषकों की सहभागिता (संशोधन) विधेयक, 2017 से पारित

जयपुर (कासं)। राज्य विधानसभा ने राजस्थान सिंचाई प्रणाली के प्रबंध में कृषकों की सहभागिता (संशोधन) विधेयक, 2017 को ध्वनिमत से पारित कर दिया। जल संसाधन मंत्री डॉ. रामप्रताप ने विधेयक को सदन में प्रस्तुत किया। विधेयक पर हुई बहस के बाद जवाब देते हुए जल संसाधन मंत्री ने कहा कि पूर्ववर्ती सरकार ने मार्च-2012 के बजट में नहरों के लिए 1274 करोड़ रूपए का प्रावधान रखा, लेकिन पौने दो साल में मात्र 5 करोड़ रूपए खर्च किए। एक भी नहर का निर्माण नहीं किया। उल्लेखनीय है कि इस संशोधित विधेयक में सिंचाई प्रणाली के प्रबंध में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने राजस्थान सिंचाई प्रणाली के प्रबंध में कृषकों की सहभागिता अधिनियम, 2000 की धारा 4, 5, 6, 7, 8 तथा 9 को संशोधित करने के लिए प्रस्ताव किया है। राजस्थान सिंचाई प्रणाली के प्रबंध में कृषकों की सहभागिता अधिनियम, 2000 में संशोधन से भूस्वामियों और उनके पति या पत्नी को जल उपयोक्ता संगमों में सदस्य बनाया जाना सुगम होगा।

सहकारी संस्थाओं का 49 करोड़ 21 लाख से होगा कम्प्यूटरीकरण

जयपुर। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि सूचना तकनीक में तेजी से हो रहे परिवर्तन एवं दैनिक कार्यों में बढ़ती उपयोगिता के मद्देनजर सहकारिता विभाग एवं संस्थाओं का कम्प्यूटरीकरण कर आनलाईन सेवाओं का विस्तार किया जाएगा। उन्होंने बताया कि सहकारिता विभाग, कॉनफैड एवं सहकारी बैंकों के कम्प्यूटरीकरण पर 49 करोड़ 21 लाख 63 हजार रुपए खर्च किए जाएंगे। इसके लिए सूचना प्रोद्यौगिकी एवं संचार विभाग द्वारा विभाग के प्रस्तावों को राज्य ई-गवर्नेंस मिशन टीम की 70वीं बैठक में इसकी मंजूरी दे दी है। किलक ने बताया कि सूचना प्रोद्यौगिकी आधारित कम्प्यूटरीकरण से सहकारी विभाग एवं सहकारी संस्थाओं के सशक्तीकरण के लिए संबल मिलेगा और इससे कार्मिकों की कार्यक्षमता में सुधार होगा। सहकारी विभाग के कम्प्यूटरीकरण पर 15 करोड़ 33 लाख 60 हजार रुपए का व्यय किया जाएगा। इससे सहकारी विभाग के सभी कार्यालयों एवं अनुभागों के कार्यों में सामंजस्य पैदा हो सकेगा तथा आंतरिक दक्षता में वृद्धि होगी। सहकारी विभाग के कम्प्यूटरीकरण के लिए 10 मुख्य मोड्यूल तैयार किए गए हैं। इनमें एनजीओ या सामाजिक संस्थाओं एवं सहकारी समितियों का पंजीयन, उनकी मोनेटरिंग, सहकारी समितियों का ऑडिट, विभाग की आन्तरिक कार्यप्रणाली एवं उसकी मोनेटरिंग, न्यायालय एवं अधिकरणों के प्रकरण, तिलम संघ, प्राथमिक भूमि विकास बैंक, राईसेम के अलावा डैशबोर्ड एवं वेब पोर्टल प्रमुख हैं।

सहकारी बैंकों का आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर होगा अपग्रेड: कुमार ने बताया कि दि राजस्थान स्टेट को-ऑपरेटिव बैंक एवं 29 जिला केन्द्रीय सहकारी बैंकों के कॉमन डाटा सेंटर एवं डीआर साईट के लिए प्रयोग में लिए जा रहे आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड करने के लिए 20 करोड़ रुपए की कार्य योजना को मंजूरी दी गई है। उन्होंने बताया कि इसके लिए उच्च क्षमता का ब्लेड सर्वर स्थापित किया जाएगा, जिससे कम स्थान में अधिक डाटा सुरक्षित हो सकेगा तथा उर्जा में बचत होगी। उन्होंने बताया कि आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड करने के लिए आरेकल से लाईसेंस लिया जाएगा ताकि बैंकिंग डाटा को बेहतर ढंग से प्रबंधन सुनिश्चित हो सके।

9 करोड़ का 'युवराज' और 900 किलो का 'बाहुबली' भी आएगा 'ग्राम' में

उदयपुर (विसं)। 7 से 9 नवम्बर के बीच उदयपुर में होने वाले ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट यानी 'ग्राम' में जहां किसान उद्यानिकी, डेयरी क्षेत्र की नई तकनीकों से रू-ब-रू होंगे, वहीं पशुपालन क्षेत्र में आए नवाचारों को भी जान सकेंगे। इस मेले में उन्नत पशुधन देखने को मिलेगा। राज्य के किसान, पशुपालकों के अलावा अन्य राज्यों से भी किसान अपने पशुधन को इस आयोजन में प्रदर्शित करेंगे। मेले में जहां 9 करोड़ रुपए का भैंसा 'युवराज' को देखने का मौका मिलेगा, वहीं 900 किलो वजनी भैंसा 'बाहुबली' भी आकर्षण का केन्द्र रहेगा।

इसी तरह भीलवाड़ा से आ रही गिर नस्ल की गाय पशुपालकों को आकर्षित करेंगी। यह गाय 23 से 30 लीटर तक दूध देती हैं। माउंट आबू की गाय की एक नवीन प्रजाति भी पहली बार इस मेले में दिखेगी। इस आयोजन में ऊंटों का नृत्य लोगों को रिझाएगा। कोटा की कनवास तहसील में कालिया कुई गांव का किसान कालूराम गुर्जर अपने बाहुबली भैंसे को लेकर उदयपुर आ रहा है। इसकी उम्र 3 साल 4 माह है। छह फीट दो इंच की ऊंचाई व नौ फीट लम्बे इस भैंसे का वजन 9 क्विंटल है। इसकी मां 30 लीटर दूध प्रतिदिन देती है। बाजार में इसकी कीमत दो लाख रुपए से ज्यादा आंकी गई है। इसे खाने में दूध, फल, सब्जियां दी जाती हैं। इसे देखने के लिए लोगों में बहुत उत्सुकता है। इसके अलावा जोधपुर से मुर्राह नस्ल का भैंसा भीम भी आ रहा है जिसे गत वर्ष ग्राम मेले में प्रथम पुरस्कार से नवाजा गया था।

तेल-तिलहनों की उपलब्धता के लिए प्रदेश के सभी डीएसओ को निर्देश

जयपुर (कासं)। भारत सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट खाद्य पदार्थों से (अनुज्ञापन संबंधी अपेक्षाएं, स्टॉक सीमा और संचलन, निबंधन) हटाना (चौथा संशोधन) आदेश 2017 के अंतर्गत खाद्य तेलों एवं तिलहनों की आपूर्ति एवं उपलब्धता बनाये रखने हेतु प्रभावी मॉनिटरिंग रखने के क्रम में उप शासन सचिव एवं खाद्य उपायुक्त ने प्रदेश के सभी जिला रसद अधिकारियों को निर्देशित किया है। इस आदेश के तहत तेल तिलहनों के व्यवसायों को नियंत्रित करने तथा उपभोक्ताओं को उचित दरों पर उपलब्ध कराने हेतु तेल-तिलहनों के व्यवसाय में लाइसेंस प्रणाली लागू रखने तथा आवश्यक समझे जाने पर स्टॉक सीमा तथा आवागमन पर प्रतिबंध लगाने हेतु राज्य सरकारों को 30 सितम्बर 2018 तक अधिकृत किया गया है।

नवंबर में गेहूं की बुआई का सही समय

जयपुर (कासं)। मौसम में हल्की ठंडक आने लगी है, इसके साथ ही गेहूं की बुआई का दौर शुरू होने वाला है। गेहूं की बुआई के लिए एक नवंबर से 30 नवंबर के बीच का समय श्रेष्ठ माना जाता है, इस दौरान बुआई लायक तापमान हो जाता है और पकने तक तापमान अनुकूल रहता है। गेहूं की बुआई से पहले पलेवा करने बीजों के उपचार की भी सलाह दी गई है। अगर गेहूं की खड़ी फसल में दीमक लग जाए तो उसका समय पर उपचार भी करना चाहिए। इस बार मानसून ने आते समय तो अच्छी और कहीं अतिवृष्टि की स्थिति कर दी। इससे इस बार खेतों में नमी थोड़ी कम है। फिर भी सिंचित क्षेत्र में बुआई का रकबा अच्छा रहने की उम्मीद है।

कैसे करें बुआई: गेहूंके लिए पहले अच्छे से पलेवा कर लें। इसके 3 दिन बाद खेत में कृषि अधिकारियों की सलाह और मृदा कार्ड में की गई सिफारिश के अनुसार फर्टिलाइजर डीएपी यूरिया ऊर दें। इसके एक-दो दिन बाद जुताई के साथ गेहूं के बीज ऊर दें। फर्टिलाइजर 8 से 10 सेंटीमीटर तक गहराई में ऊर्रे और गेहूं का बीज 4-5 सेंटीमीटर तक गहराई में ऊर्रे।

उन्नत किस्म के बीजों का करें इस्तेमाल

संयुक्त कृषि निदेशक रामगोपाल शर्मा का कहना है कि अच्छी फसल लेने के लिए उन्नत किस्म के बीजों का ही इस्तेमाल करना चाहिए। तय समय पर बुआई करने पर राज-4037, राज-4079 और राज-4120 बीज काम में लेने चाहिए। देरी से बुआई करने की स्थिति में राज-3765 और लोकवान नामक बीजों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

सिंचाई कब करें

गेहूं की बिजाई करने के 21 दिन तक कुछ नहीं करें। इसके बाद पहली पिलाई करें। साथ ही नत्रजन की दूसरी खुराक दी जाए। बुआई के 35 दिन बाद खरपतवार नियंत्रण के लिए 24-डी नामक दवा का प्रयोग करें। बुआई के 45 दिन बाद दूसरी पिलाई करें। साथ में नत्रजन की तीसरी खुराक खेत में डालें। गेहूं के लिए 6 पिलाई जरूरी होती है। गेहूं 125 से 130 दिन में पककर तैयार हो जाता है।

रोगों का उपचार

गेहूं की खड़ी फसल में दीमक लगने का खतरा रहता है। इससे बचने के लिए 4.5 लीटर लिक्विड क्लोरोपायरीफोस प्रति हैक्टेयर की दर से डालें। अगर सिंचाई धोरी पाली के अनुसार कर रहे हैं तो पानी बहाव वाले क्षेत्र में बूंद-बूंद करके इसे डालें। अगर फव्वारा सिंचाई पद्धति है तो मिट्टी को गीला कर उसमें इस दवा को मिलाकर खेत में भुरकाव करें। इसके बाद फव्वारे से सिंचाई करें, ताकि दवा असर करने लगे।

राज्य में होगी 2123 करोड़ रुपए से अधिक की समर्थन मूल्य पर खरीद

जयपुर (कासं)। राज्य में किसानों को आर्थिक संबल देने के लिए समर्थन मूल्य पर दलहन एवं तिलहन की तीव्र गति से खरीद की जा रही है और अब तक 126 करोड़ 74 लाख रुपए से अधिक मूल्य की खरीद हो चुकी है। खरीद के पेटे किसानों को त्वरित भुगतान की व्यवस्था की गई है और किसानों के खातों में 87 करोड़ रुपए से अधिक की राशि ट्रांसफर कर दी गई है।

यह जानकारी रजिस्ट्रार एवं प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता भय कुमार ने राजफैड में समर्थन मूल्य पर खरीद की समीक्षा करते हुए दी। कुमार ने बताया कि राज्य के किसानों से 836.25 करोड़ रुपए के मूंग, 162 करोड़ रुपए के उड़द, 457.50 करोड़ रुपए की सोयाबीन एवं 667.50 करोड़ रुपए की मूंगफली की उपज को खरीदने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने बताया कि इस बार राज्य में कुल 2 हजार 123 करोड़ 25 लाख रुपए मूल्य के दलहन एवं तिलहन की खरीद की जाएगी। उन्होंने बताया कि अब तक 15 हजार 79 काश्तकारों से समर्थन मूल्य पर 126 करोड़ 74 लाख रुपए मूल्य की मूंग, उड़द, सोयाबीन एवं मूंगफली की खरीद की जा चुकी है। जिसमें से 10 हजार 804 किसानों को 87 करोड़ 33 लाख रुपए का भुगतान किया जा चुका है। उन्होंने बताया कि इस बार से कृषि उपज की राशि को किसान परिवारों की महिला मुखिया के बैंक खातों में ट्रांसफर किया जा रहा है।

मशरूम की खेती कर दोगुना लाभ कमा सकते हैं किसान

पाली (विसं)। किसान परंपरागत खेती के साथ अब मशरूम की खेती करके भी दो गुना लाभ कमा सकते हैं। मशरूम का उपयोग भोजन और औषधि दोनों ही रूप में किया जा सकता है। मशरूम में बहुत कम वसा होती है। यह हृदय संबंधी रोगों के लिए भी उपयुक्त होता है। पहले मशरूम का सेवन देश के कुछ ही प्रदेशों और विशिष्ट क्षेत्रों तक ही सीमित था, लेकिन अब इसे सभी क्षेत्रों में उगाया जाने लगा है। प्रदेश में मशरूम की दो प्रजातियां ढींगर मशरूम दूधिया मशरूम का अधिक उत्पादन किया जा रहा है। इन दोनों प्रजातियों के मशरूम के लिए अलग-अलग तापमान की आवश्यकता होती है। प्लीयूरोटस ऑएस्टअर मशरूम का वैज्ञानिक नाम है।

'नवीन अफीम नीति में किसानों के हितों के अनुरूप बदलाव करे केन्द्र सरकार'

नई दिल्ली (विसं)। नगरीय विकास एवं स्वायत शासन मंत्री श्रीचंद कृपलानी ने नई दिल्ली में केन्द्रीय वित्त राज्यमंत्री शिव प्रताप शुक्ला से उनके नॉर्थ ब्लॉक स्थित कार्यालय में बैठक कर आग्रह किया कि केन्द्र सरकार द्वारा वर्ष 2017-18 के लिए घोषित नवीन अफीम नीति में 5.9 प्रतिशत मार्फिन को आधार बनाकर अफीम कास्त के पट्टे जारी किए जाने के प्रावधान में यथोचित परिवर्तन किया जावे ताकि किसानों को जल्द राहत पहुंचाई जा सके। बैठक में चित्तौड़गढ़ के सांसद सी.पी.जोशी, मंदसौर के सांसद सुधीर गुप्ता सहित वित्त मंत्रालय एवं नारकोटिक्स विभाग के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे। बैठक में कृपलानी

ने केन्द्रीय मंत्री को अवगत करवाया कि केन्द्र सरकार की ओर से बनाई गई नवीन अफीम नीति में मार्फिन की मात्रा का जो मापदंड निर्धारित किया है उससे हजारों काश्तकारों के अफीम पट्टे निरस्त होने की आशंका है। इसलिए क्षेत्र की स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए व किसानों को राहत देने के लिए गत वर्ष की औसत या 4 प्रतिशत मार्फिन पर अफीम उपज जमा कराने वाले किसानों को वर्ष 2017-18 के लिए अफीम काश्त के पट्टे जारी करवाए जावें। बैठक में चित्तौड़गढ़ सांसद सी.पी.जोशी ने कहा कि राजस्थान और मध्य प्रदेश के अधिकतर हिस्सों में अफीम की पैदावार मौसम पर निर्भर करती है। प्रतिकूल मौसम एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण अफीम में मार्फिन का प्रतिशत उचित नहीं बैठता है इसलिए मार्फिन के लिए वर्तमान में तय किया गया मापदंड किसानों को भारी नुकसान का सबब बना हुआ है।

किसानों की कर्ज माफी तक जारी रहेगा कांग्रेस का आंदोलनः रामेश्वर डूडी

जयपुर (कासं)। राजस्थान विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष रामेश्वर डूडी ने अपने निवास पर किसान लोक मिलन कार्यक्रम में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि किसानों की कर्जमाफी तक कांग्रेस का आंदोलन नहीं थमेगा, पूरे प्रदेश का किसान सरकार की कार्यशैली से आक्रोशित है। डूडी ने कहा कि किसानों ने हमसे मिलकर अपनी समस्याओं पर चर्चा के लिये कहा तो हमने ये किसान लोक मिलन कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें प्रदेशभर के किसानों ने भाग लिया। किसानों से चर्चा

के बाद यह निर्णय लिया गया है कि किसानों की कर्जमाफी तक आंदोलन जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस राजस्थान में गांव-गांव, पंचायत तक जाकर किसानों से मिलेगी और सरकार की किसान विरोधी नीति के खिलाफ समर्थन मांगकर दबाव बनायेगी। किसानों के मुद्दे पर सरकार पर विधानसभा से भाग खड़े होने का आरोप लगाते हुए डूडी ने कहा कि सरकार ने किसानों सहित हर वर्ग के साथ छल किया है।

राज्य में हुई 120 करोड़ से अधिक की हुई समर्थन मूल्य पर खरीद

जयपुर (कासं)। रजिस्ट्रार एवं प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता अभय कुमार ने राजफैड में समर्थन मूल्य पर खरीद की समीक्षा करते हुए बताया कि राज्य में अब तक 120 करोड़ रुपए से अधिक मूल्य की समर्थन मूल्य पर मूंग, उड़द, सोयाबीन तथा मूंगफली की खरीद की जा चुकी है। उन्होंने बताया कि किसानों में समर्थन मूल्य पर दलहन एवं तिलहन की खरीद के लिए ऑनलाईन पंजीयन की प्रक्रिया को लेकर भारी उत्साह है। कुमार ने बताया कि अब तक 14 हजार 444 काश्तकारों से समर्थन मूल्य पर खरीद की जा चुकी है। राज्य सरकार द्वारा महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त करने तथा कृषि कार्यों में उनकी उपयोगिता को महत्व देने की दृष्टि से भामाशाह कार्ड के जरिए ऑनलाईन पंजीयन की व्यवस्था की गई है।

प्रदेश में 15 लाख टन कपास होने की उम्मीद

अलवर (विसं)। इस बार प्रदेश में 15 लाख टन से ज्यादा कपास का उत्पादन होने की उम्मीद है। प्रदेश में इस बार 4 लाख 90 हजार 656 हैक्टेयर में कपास की बुआई की गई थी। पिछली बार 4 लाख 71 हजार 167 हैक्टेयर में कपास की बुआई थी और 15 लाख 60 हजार 267 हैक्टेयर टन कपास पैदा हुई थी। इस बार कपास की बुआई का रकबा बढ़ने से उत्पादन की बढ़ने की उम्मीद की जा रही है।

पिछले पांच साल में औसतन 14 लाख 78 हजार 736 टन कपास का प्रदेश में उत्पादन हुआ था। अलवर कृषि मंडी में इन दिनों कपास की बंपर आवक हो रही है। मंडी में कपास की बिक्री बढ़ने से इसके दामों में भी बढ़ोत्तरी भी हुई है। मंडी व्यापारी नरेश अग्रवाल ने बताया कि मंडी में इन दिनों प्रतिदिन करीब 400-500 क्विंटल कपास खरीदी बेची जा रही है।

Hindchem Corproation

SUPPER POTASSIUM HUMATE SHINY FLAKES

ZINK EDTA

SEAWEED EXTRACT FLACKES

N.P.K. WATER SOLUBLE FERTILIZER

AMINO ACID

AMINO+HUMIC SHINY BALLS
FERROUS SULPHATE19%
MAGNESIUM SULPHATE 9.6%
FERROUS EDTA12%
E.D.T.A. ACID
CAMPHOR
SODIUM BICARBONATE
EDTA DISODIUM
CITRIC ACID MONOHYDRATE
MANGANESE SULPHATE 30.5%
SULPHUR 90% -80WDG
BORON 20%
BRONOPOL 25%
PHOSPHORIC ACID

We Welcome Your Valuable Inquiry
Tel. 022-66998360/61
Fax-022-66450908
Email id: mamta@hindchem.com
Mo. 9004744077

गेहूँ की खेती कैसे करें!

संतरा हरितवाल, विवेक शर्मा,
मुकेश कुमार शेषमा, वर्षा गुप्ता

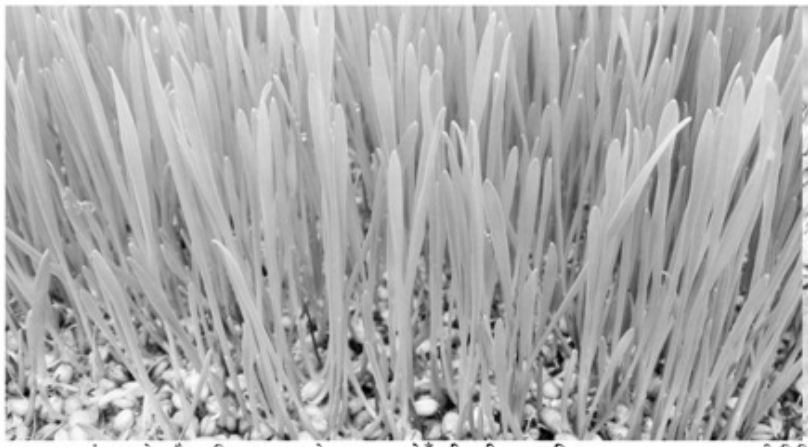

विद्यावाचस्पति छात्रों, पादप प्रजनन एवं आनुवंशिकी विभाग, एस. के. ऐन. कृषि महाविद्यालय, जोबनेर विद्यावाचस्पति छात्र, शस्य विज्ञान बपतला अंग्रौ, हैदराबाद विद्यावाचस्पति छात्र, शस्य विज्ञान राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर

गेहूँ की खेती विश्व के प्राय: हर भाग में होती है। संसार की कुल 23 प्रतिशत भूमि पर गेहूँ की खेती की जाती है। गेहूँ विश्वव्यापी महत्व की फसल है। मुख्य रूप से एशिया में धान की खेती की जाती है, तो भी विश्व के सभी प्रायद्वीपों में गेहूँ उगाया जाता है। विश्व में सबसे अधिक क्षेत्र फल में गेहूँ उगाने वाले प्रमुख तीन राष्ट्र भारत, रशियन फैडरेशन और संयुक्त राज्य अमेरिका है। गेहूँ उत्पादन में चीन के बाद भारत तथा अमेरिका का क्रम आता है।

उपयुक्त जलवायु क्षेत्र- गेहूँ मुख्यत: एक ठण्डी एवं शुष्क जलवायु की फसल है अत: फसल बोने के समय 20 से 22 डिग्री से., बढ़वार के समय इष्टतम ताप 25 डिग्री से. तथा पकने के समय 14 से 15 डिग्री से. तापक्रम उत्तम रहता है। तापमान से अधिक होने पर फसल जल्दी पाक जाती है और उपज घट जाती है। पाले से फसल को बहुत नुकसान होता है। बाली लगने के समय पाला पड़ने पर बीज अंकुरण शक्ति खो देते है और उसका विकास रूक जाता है। छोटे दिनो में पत्तियां और कल्लों की बाढ़ अधिक होती है जबकि दिन बढ़ने के साथ-साथ बाली निकलना आरम्भ होता है। इसकी खेती के लिए 60-100 से. मी. वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्र उपयुक्त रहते है। पौधों की वृद्धि के लिए वातावरण में 50-60 प्रतिशत आर्द्रता उपयुक्त पाई गई है। ठण्डा शीतकाल तथा गर्म ग्रीष्मकाल गेंहूँ की बेहतर फसल के लिए उपयुक्त माना जाता है। गर्म एवं नम जलवायु गेहूँ के लिए उचित नहीं होती, क्योंकि ऐसे क्षेत्रों में फसल में रोग अधिक लगते है।

भूमि का चयन : गेहूँ सभी प्रकार की कृषि योग्य भूमियों में पैदा हो सकता है परन्तु दोमट से भारी दोमट, जलोढ़ मृदाओं में गेहूं की खेती सफलतापूर्वक की जाती है। जल निकास की सुविधा होने पर मटियार दोमट तथा काली मिट्टी में भी इसकी अच्छी फसल ली जा सकती है। कपास की काली मृदा में गेहूँ की खेती के लिए सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है। भूमि का पी. एच. मान 5 से 7.5 के बीच में होना फसल के लिए उपयुक्त रहता है क्योंकि अधिक क्षारीय या अम्लीय भूमि गेहूं के लिए अनुपयुक्त होती है।

खेत की तैयारी : खरीफ की फसल की कटाई के बाद एक जुताई मिटटी पलटने वाले हल से करें। फिर 2-3 हल्की जुताइयां करनी चाहिए। यदि खेत में नमी की कमी हो ता बोआई के 8-10 दिन पूर्व सिंचाई (पलेवा) करनी चाहिए। यदि खेत में गन्ना, धान या लाही है तो खड़ी फसल में सिंचाई कर देनी चाहिए जो गेहूँ की बोआई के लिए ठीक रहेगा। बोआई से पहले खेत एकसार होना चाहिए। जहां दीमक तथा गुझिया का प्रकोप हो वहां 5 प्रतिशत एल्ड्रिन धूल 25 कि.ग्रा. प्रति हैक्टर के हिसाब से आखिरी जुताई के समय खेत में डाल देनी चाहिए।

उन्नत किस्में : फसल उत्पादन में उन्नत किस्मों के बीज का महत्वपूर्ण स्थान है। गेहूं की किस्मों का चुनाव जलवायु, बोने का समय और क्षेत्र के आधार पर करना चाहिए।

गेहूँ की प्रमुख उन्नत किस्मों की विशेषताएं -

रतन: इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह किस्म सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए उपयुक्त है। यह किस्म 112 दिन में पकती है। दाना गोल होता है। सूखा व गेरूआ रोधक किस्म है जो औसतन 19 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज देती है।

अरपा: इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय द्वारा विकसित यह किस्म देर से बोने के लिए सम्पूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए उपयुक्त है। यह किस्म 112 दिन में पकती है। दाना अम्बर रंग का होता है। अधिक तापमान, गेरूआ रोग व कटुआ कीट रोधक किस्म है जो औसतन 23-24 क्विंटल प्रति हैक्टर उपज देती है।

नर्मदा 4 : यह पिसी सरबती किस्म, काला और भूरा गेरूआ निरोधक है। यह असिंचित एवं सीमित सिंचाई क्षेत्रों के लिये उपयुक्त है। इसके पकने का समय 125 दिन हैं इसकी पैदावार 12-19 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसका दाना सरबती चमकदार होता है। यह चपाती बनाने के लिये विशेष उपयुक्त है।

एन.पी. 404: यह काला और भूरा गेरूआ निरोधक कठिया किस्म असिंचित दशा के लिये उपयुक्त है। यह 135 दिन में पक कर तैयार होती है। पैदावार 10 से 11 क्विंटल प्रति हेक्टयर होती है। इसका दाना बड़ा, कड़ा और सरबती रंग का होता है।

मेघदूत : यह काला और भूरा गेरूआ निरोधक कठिया जाति असिंचित अवस्था के लिये उपयुक्त है। इसके पकने का समय 135 दिन है। इसकी पदौवार 11 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसका दाना एन.पी.404 से कड़ा होता है।

हायब्रिड 65 : यह पिसिया किस्म है, जो भूरा गेरूआ निरोधक है। यह 130 दिन में पकती है। इसकी पैदावार असिंचित अवस्था में 13 से 19 क्विंटल प्रति हेक्टयर होती है। इसका दाना, सरबती, चमकदार, 1000 बीज का भार 42 ग्राम होता है।

मुक्ता : यह पिसिया किस्म है जो भूरा गेरूआ निरोधक है। असिंचित अवस्था के लिये उपयुक्त है। यह 130 दिन में पकती है। इसकी पैदावार 13-15 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसका दाना सरबती लम्बा और चमकदार होता है।

सुजाता : यह पिसिया (सरबती) किस्म काला और भूरा गेरूआ सहनशील है। असिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त है। यह 130 दिन में पकती है। इसकी पैदावा 13-17 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसका दाना, सरबती, मोटी और चमकदार होता है।

सोनालिका : यह गेरूआ निरोधक, अंबर रंग की, बड़े दाने वाले किस्म। यह 110 दिनों में पककर तैयार हो जाता है। देर से बोने के लिए उपयुक्त है। धान काटने के बाद जमीन तैयार कर बुवाई की जा सकती है। इसकी पैदावार 30 से 35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

कल्याण सोना (एच.डी.एम.1593): इसका दाना चमकदार, शरबती रंग का होता है। यह किस्म 125 दिन में पक जाती है। पैदावार प्रति हैक्टेयर 30 से 35 क्विंटल तक होती है। गेरूआ रोग से प्रभावित यह किस्म अभी भी काफी प्रचलित है।

नर्मदा 112 : यह पिसिया (सरबती) किस्म है जो काला और भूरा गेरूआ निरोधक है। असिंचित एवं सीमित सिंचाई वाले क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है। इसके पकने का समय 120-135 दिन है। इसकी पैदावार 14-16 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है। इसका दाना सरबती चमकदार और बड़ा होता है। इह चपाती बनाने के लिए विशेष उपयुक्त है।

गेहूँ की नवीन उन्नत किस्म

जे.डब्लू.-1106: यह मध्यम अवधि (115 दिन) वाली किस्म है जिसके पौधे सीधे मध्यम ऊँचाई के होते है। बीज का आकार सिंचित अवस्था में बड़ा व आकर्षक होता है। सरबती तथा अधिक प्रोटीन युक्त किस्म है जिसकी आसत उपज 40-50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

अमृता (एच.आई. 1500): यह सरबती श्रेणी की नवीनतम सूखा निरोधक किस्म है। इसका पौधा अर्द्ध सीधा तथा ऊँचाई 120-135 से.मी. होती है। दाने मध्यम गोल, सुनहरा (अम्बर) रंग एवं चमकदार होते है। इसके 1000 दानों का वजन 45-48 ग्राम और बाल आने का समय 85 दिन है। फसल पकने की अवधि 125-130 दिन तथा आदर्श परिस्थितियों में 30-35 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देती है।

स्वर्णा (एच.आई.-1479): समय से बोने हेतु मध्यप्रदेश की उर्वरा भूमियों के लिए शीघ्र पकने वाली गेरूआ निरोधक किस्म है। गेहू का दाना लम्बा, बोल्ड, आकर्षक, सरबती जैसा चमकदार व स्वादिष्ट होता है। इसके 1000 दानो का वजन 45-48 ग्राम होता है। फसल अवधि 110 दिन हे। इस किस्म से 2-3 सिंचाइयों से अच्छी उपज ली जा सकती है। गेहूँ की लोक-1 किस्म के विकल्प के रूप में इसकी खेती की जा सकती है।

हर्षित (एचआई-1531): यह सूखा पाला अवरोधी मध्यम बोनी (75-90 से.मी. ऊँचाई) सरबती किस्म है। इसके दाने सुडौल, चमकदार, सरबती एवं रोटी के लिए उत्तम है जिसे सुजाता किस्म के विकल्प के रूप में उगाया जा सकता है। फसल अवधि 115 दिन है तथा 1-2 सिंचाई में 40 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से अधिक उपज देती है।

मालव शक्ति (एचआई-8498) : यह कम ऊँचाई वाली (85 से.मी) बोनी कठिया (ड्यूरम) किस्म है। यह नम्बर-दिसम्बर तक बोने हेतु उपयुक्त किस्म है। इसका दाना अत्यन्त आकर्षक, बड़ा, चमकदार, प्रोटीन व विटामिन ए की मात्रा अधिक, अत्यन्त स्वादिष्ट होता है। बेकरी पदार्थ, नूडल्स, सिवैया, रवा आदि बनाने के लिए उपयुक्त है। बाजार भाव अधिक मिलता है तथा गेहूँ निर्यात के लिए उत्तम किस्म है। इसकी बोनी नवम्बर से लेकर दिसम्बर के द्वितीय सप्ताह तक की जा सकती है। इसकी फसल लोक-1 से पहले तैयार हो जाती है। इससे अच्छी उपज लेने के लिए 4-5 पानी आवश्यक है।

मालवश्री (एचआई-8381) : यह कठिया गेहूँ की श्रेणी में श्रेष्ठ किस्म है। इसके पौधे बौने (85 - 90 से.मी. ऊँचाई), बालियों के बालों का रंग काला होता है। यह किस्म 4-5 सिंचाई मे बेहतर उत्पादन देती है। इसके 1000 दानों का वजन 50-55 ग्राम एवं उपज क्षमता 50-60 क्विंटल प्रति हेक्टर है।

राज-3077 गेहूँ की ऐसी नयी किस्म है, जिसमें अन्य प्रजातियों की अपेक्षा 12 प्रतिशत अधिक प्रोटीन पाया जाता है। इसे अम्लीय एवं क्षारीय दोनों प्रकार की मिट्टियों में बोया जा सकता है।

बीजोपचार : बुआई के लिए जो बीज इस्तेमाल किया जाता है वह रोग मुक्त, प्रमाणित तथा क्षेत्र विशेष के लिए अनुशंषित उन्नत किस्म का होना चाहिए। अलावा रोगों की रोकथाम के लिए ट्राइकोडरमा की 4 ग्राम मात्रा 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के साथ प्रति किग्रा बीज की दर से बीज शोधन किया जा सकता है।

बोआई का समय : गेहूँ रबी की फसल है जिसे शीतकालीन मौसम में उगाया जाता है। भारत के विभिन्न भागों में गेहूँ का जीवन काल भिन्न-भिन्न रहता है। सामान्य तौर पर गेहूं की बोआई अक्टूबर से दिसंबर तक की जाती है तथा फसल की कटाई फरवरी से मई तक की जाती है। जिन किस्मों की अवधि 135-140 दिन है, उनको नवम्बर के प्रथम पखवाड़े में व जो किस्में पकने में 120 दिन का समय लेती है, उन्हे 15- 30 नवम्बर तक बोना चाहिए। गेहूँ की शीघ्र बुवाई करने पर बालियाँ पहले निकल आती है तथा उत्पादन कम होता है जबकि तापक्रम पर बुवाई करने पर अंकुरण देर से होता है। प्रयोगों से यह देखा गया है कि लगभग 15 नवम्बर के आसपास गेहूँ बोये जाने पर अधिकतर बौनी किस्में अधिकतम उपज देती है। अक्टूबर के उत्तरार्द्ध में बोई गई लंबी किस्मों से भी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है। असिंचित अवस्था में बोने का उपयुक्त समय वर्षा ऋतु समाप्त होते ही मध्य अक्टूबर के लगभग है। अर्द्ध सिंचित अवस्था में जहाँ पानी सिर्फ 2-3 सिंचाई के लिये ही उपलब्ध हो, वहाँ बोने का उपयुक्त समय 25 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक है। सिंचित गेहूँ बोने का उपयुक्त समय नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा है। बोनी में 30 नवम्बर से अधिक देरी नहीं होना चाहिए। यदि किसी कारण से बोनी विलंब से करनी हो तब देर से बोने वाली किस्मो की बोनी दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक हो जाना चाहिये। देर से बोई गई फसल को पकने से पहले ही सूखी और गर्म हवा का सामना करना पड़ जाता है जिससे दाने सिकुड़ जाते है तथा उपज कम हो जाती है।

बीज बोने की गहराई : बौने गेहूं की बोआई में गहराई का विशेष महत्व होता है, क्योंकि बौनी किस्मों में प्राकुंरचोल की लम्बाई 4-5 से. मी. होती है। अत: यदि इन्हे गहरा बो दिया जाता है तो अंकुरण बहुत कम होता है। गेहूँ की बौनी किस्मों को 3-5 से.मी. रखते है। देशी (लम्बी) किस्मों में प्रांकुरचोल की लम्बाई लगभग 7 सेमी. होती है। अत: इनकी बोने की गहराई 5-7 सेमी. रखनी चाहिये।

बोआई की विधियाँ: आमतौर पर गेहूँ की बोआई चार बिधियों से (छिटककर, कूड़ में चोगे या सीड ड्रिल से तथा डिबलिंग) से की जाती है। गेहूं बोआई हेतु स्थान विशेष की परिस्थिति अनुसार विधियाँ प्रयोग में लाई जा सकती है:

छिटकवाँ विधि: इस विधि में बीज को हाथ से समान रूप से खेत में छिटक दिया जाता है और पाटा अथवा देशी हल (**शेष पेज 7 पर**)

पेज 6 का शेष

गेहूं की खेती कैसे करे?

चलाकर बीज को मिट्टी से ढक दिया जाता है। इस विधि से गेहूँ उन स्थानों पर बोया जाता है, जहाँ अधिक वर्षा होने या मिट्टी भारी दोमट होने से नमी अपेक्षाकृत अधिक समय तक बनी रहती है ।

हल के पीछे कूड़ में बोआई: गेहूँ बोने की यह सबसे अधिक प्रचलित विधि है । हल के पीछे कूड़ में बीज गिराकर दो विधियों से बुआई की जाती है -

(अ) हल के पीछे हाथ से बोआई (केरा विधि): इसका प्रयोग उन स्थानों पर किया जाता है जहाँ बुआई अधिक रकबे में की जाती है तथा खेत में पर्याप्त नमी रहती हो। इस विधि में देशी हल के पीछे बनी कूड़ों में जब एक व्यक्ति खाद और बीज मिलाकर हाथ से बोता चलता है तो इस विधि को केरा विधि कहते हैं। सम्पूर्ण खेत बो जाने के बाद पाटा चलाते है, जिससे बीज भी ढंक जाता है और खेत भी चोरस हो जाता है ।

देशी हल के पीछे नाई बाँधकर बोआई (पोरा विधि) : इस विधि का प्रयोग असिंचित क्षेत्रों या नमी की कमी वाले क्षेत्रों में किया जाता है। इसमें नाई, बास या चैंगा हल के पीछे बंधा रहता है। एक ही आदमी हल चलाता है तथा दूसरा बीज डालने का कार्य करता है। इसमें उचित दूरी पर देशी हल द्वारा 5-8 सेमी. गहरे कूड़ में बीज पड़ता है । इस विधि मे बीज समान गहराई पर पड़ते है जिससे उनका समुचित अंकुरण होता है।

डिबलर द्वारा बोआई: इस विधि में प्रत्येक बीज को मिट्टी में छेदकर निर्दिष्ट स्थान पर मनचाही गहराई पर बोते है। इसमें एक लकड़ी का फ्रेम को खेत में रखकर दबाया जाता है तो खूटियों से भूमि में छेद हो जाते हैं जिनमें 1-2 बीज प्रति छेद की दर से डालते हैं। इस विधि से बीज की मात्रा काफी कम (25-30 किग्रा. प्रति हेक्टर) लगती है परन्तु समय व श्रम अधिक लगने के कारण उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

फर्ब विधि: इस विधि में सिंचाई जल बचाने के उद्देश्य से ऊँची उठी हुई क्यारियाँ तथा नालियाँ बनाई जाती है । क्यारियों की चोड़ाई इतनी रखी जाती है कि उस पर 2-3 कूड़े आसानी से बोई जा सके तथा नालियाँ सिंचाई के लिए प्रयोग में ली जाती है। इस प्रकार लगभग आधे सिंचाई जल की बचत हो जाती है। इस विधि में सामान्य प्रचलित विधि की तुलना में उपज अधिक प्राप्त होती है। इसमें ट्रैक्टर चालित यंत्रों से बुवाई की जाती है। यह यंत्र क्यारियाँ बनाने, नाली बनाने तथा क्यारी पर कूंड़ों में एक साथ बुवाई करने का कार्य करता है ।

शून्य कर्षण सीड ड्रिल विधि: धान की कटाई के उपरांत किसानों को रबी की फसल गेहूं आदि के लिए खेत तैयार करने पड़ते हैं। गेहूं के लिए किसानों को अमूमन 5-7 जुताइयां करनी पड़ती हैं। ज्यादा जुताइयों की वजह से किसान समय पर गेहूं की बोआई नहीं कर पाते, जिसका सीधा असर गेहूं के उत्पादन पर पड़ता है। इसके अलावा इसमें लागत भी अधिक आती है। ऐसे में किसानों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। शून्य कर्षण से किसानों का समय तो बचता ही है, साथ ही लागत भी कम आती है, जिससे किसानों का लाभ काफी बढ़ जाता है। इस विधि के माध्यम से खेत की जुताई और बिजाई दोनों ही काम एक साथ हो जाते हैं। इससे बीज भी कम लगता है और पैदावार करीब 15 प्रतिशत बढ़ जाती है।

खाद एवं उर्वरक : फसल की प्रति इकाई पैदावार बहुत कुछ खाद एवं उर्वरक की मात्रा पर निर्भर करती है । गेहूँ में हरी खाद, जैविक खाद एवं रासायनिक खाद का प्रयोग किया जाता है । खाद एवं उर्वरक की मात्रा गेहूँ की किस्म, सिंचाई की सुविधा, बोने की विधि आदि कारकों पर निर्भर करती है।अच्छी उपज लेने के लिए भूमि में कम से कम 35-40 क्विंटल गोबर की अच्छे तरीके से सड़ी हुई खाद 50 किलो ग्राम नीम की खली और 50 किलो अरंडी की खली आदि इन सब खादों को अच्छी तरह मिलाकर खेत में बुवाई से पहले इस मिश्रण को समान मात्रा में बिखेर लें।

सिंचाई - भारत में लगभग 50 प्रतिशत क्षेत्र में गेहूँ की खेती असिंचित दशा में की जाती है। परन्तु बौनी किस्मों से अधिकतम उपज के लिए सिंचाई आवश्यक है। गेहूँ की बौनी किस्मों को 30-35 हेक्टर से.मी. और देशी किस्मों को 15-20 हेक्टर से.मी. पानी की कुल आवश्यकता होती है।

1. पहली सिंचाई शीर्ष जड़ प्रवर्तन अवस्था पर अर्थात बोने के 20 से 25 दिन पर सिंचाई करना चाहिये। लम्बी किस्मों में पहली सिंचाई सामान्यत: बोने के लगभग 30-35 दिन बाद की जाती है।
2. दूसरी सिंचाई दोजियां निकलने की अवस्था अर्थात बोआई के लगभग 40-50 दिन बाद।
3. तीसरी सिंचाई सुशांत अवस्था अर्थात बोआई के लगभग 60-70 दिन बाद ।
4. चौथी सिंचाई फूल आने की अवस्था अर्थात बोआई के 80-90 दिन बाद ।
5. दूध बनने तथा शिथिल अवस्था अर्थात बोने के 100-120 दिन बाद।

पर्याप्त सिंचाईयां उपलब्ध होने पर बौने गेहूं में 4-6 सिंचाई देना श्रेयस्कर होता है । यदि मिट्टी काफी हल्की या बलुई है तब 2-3 अतिरिक्त सिंचाईयों की आवश्यकता हो सकती है ।

नींबू पर कीट एवं रोगों नियंत्रण हेतु प्रक्षेत्र दिवस मनाया

नई दिल्ली (विसं)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई.सी.ए.आर.),नई दिल्ली द्वारा संचालित कृषि विज्ञान केन्द्र, बड़गांव, उदयपुर द्वारा मावली तहसील के फलीचड़ा गाँव में नींबू पर कीट एवं रोगो के नियंत्रण हेतु प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया जिसमें 54 ग्रामीण महिलाओं और पुरूषों ने भाग लिया। संस्था के विषय विशेषज्ञ डॉ. दीपक जैन (पौध संरक्षण) ने बताया कि नींबू वर्गीय पौधों खासकर नींबू, संतरा, माल्टा व मौसमी रोगों व कीटो की वजह से अत्यधिक हानि किसानों को उद्यानों में उठानी पड़ती हैं। इन रोगों में खासकर केन्कर तथा रसचूसक कीटो (सिट्रससायला, लीफमाइनर, सफेद मक्खी, मोयला आदि) का भयंकर प्रकोप होता है, जिससे फलों की गुणवत्ता तो प्रभावित होती है साथ ही किसानों को बाजार मूल्य भी कम मिलता है व काफी अधिक आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। इस हेतु फलीचड़ा गांव में 7 किसानों के यहां 15 बीघा में नींबू उद्यानो में प्रदर्शन (एफएल.डी.) लगाये गये। डॉ. जैन ने बताया कि ये रसचूसक कीट नींबू में अनेक बीमारियों खासकर हरितन (सिट्रस ग्रीनिंग), शीघ्रपतन आदि बीमारियों में वाहक का कार्य भी करते है, जिससे बीमारियां विक्राल रूप ले लेती है। इस दिशा में किसानों के उद्यानों पर रोग व कीटो की शुरूआत व प्रचंडता पर कीटनाशकों का समय-समय पर छिडकाव कर डेटा लिये गये। इसके प्रबंधन को देखते हुए रतनलाल जाट के खेत पर प्रक्षेत्र दिवस मनाया गया। जहां किसानों ने साक्षात आंखों से नींबू में रोग व कीटो के प्रबंधन को देखा व सराहा।

कृषि सलाह
किसान भाई ध्यान देवें

सरसों : सरसों की बुवाई जिन कृषकों ने अभी तक नहीं की है वह इनकी बुवाई अति शीघ्र कर देवें। पूसा जय किसान (बायो-902), पी.आर.-15 (क्रान्ति),टी-59 (वरूणा), आर. आर. एन. 573 एवं लक्ष्मी सरसों की उन्नत किस्मे हैं । बुवाई के समय 30 किलो नत्रजन एवं 15 किलो फास्फोरस ऊर कर देवे। बीजों को बुवाई से पूर्व 2.5 ग्राम मैन्कोजेब प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोयें। बुवाई के लिये 4-5 किलो बीज प्रति हैक्टेयर (बारानी) एवं 2.5 किलो बीज प्रति हैक्टेयर (सिंचित) प्रयोग में लेवे ।

चना: चना की बुवाई जिन कृषकों ने अभी तक नहीं की है वह इनकी बुवाई अति शीघ्र कर देवें । आर.एस.जी.991, आर.एस.जी.-888 (अनुभव), जी.एन.जी.-1581, आर.एस.जी. 902, आर.एस.जी. 895, आर.एस.जी. 973, आर.एस.जी. 896, चने की उन्नत किस्में है। चने की बुवाई हेतु 70-80 किलो बीज प्रति हैक्टेयर प्रयोग में लेवे तथा बुवाई से पूर्व बीजों को जड़गलन व उखटा रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डिजिम 0.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें । बीजों को राइजोबियम कल्चर से भी पैकिट पर दिये गये दिशा निर्देशों के अनुसार उपचारित करें । बारानी चने की फसल में 10 किलों नत्रजन व 20 किलो फास्फेट प्रति हैक्टेयर की दर से ऊर कर देवें ।

मटर : मटर की बुवाई का समय है । मटर की बुवाई हेतु प्रति हैक्टेयर 80-100 किलो बीज प्रयोग में लेवें । मटर की फसल को जड़गलन रोग से बचाने हेतु बीजों को बुवाई से पूर्व थाइरम या मैन्कोजेब 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें ।

लहसुन: लहसुन की बुवाई करने का समय है । बीजों को बुवाई से पूर्व मैन्कोजेब 2.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें ।

मूली : मूली (जापानीज व्हाईट एवं हिल क्रीन) की बुवाई करने का यह उचित समय है । मूली की बुवाई के लिये 10-12 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर रखे एवं बुवाई से पहले 20 किलो नत्रजन, 48 किलो फास्फोरस तथा 48 किलो पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से देवे।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : .....

संस्था का नाम : .....

पूरा पता : .....

ग्राम : .....तहसील .....

जिला ..... राज्य ..... पिन कोड

दूरभाष कार्य : ..... निवास .....

सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 ☐ तीन वर्ष 351 ☐ पांच वर्ष 501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में .....

बैंक का नाम ..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक ..... दिनांक .....

स्थान ..... प्रतिनिधि का नाम ..... हस्ताक्षर सदस्य .....

दिनांक .....

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड़ (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

एवं हस्ताक्षर

एवं संस्था सील

बूंदी में नवनिर्मित कृषि उपज मण्डी का लोकार्पण

किसानों को मिलेगी परेशानियों से निजात, उपज का मिलेगा वाजिब दाम : सैनी

बूंदी (विसं)। कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि बूंदी की नवनिर्मित नवीन कृषि उपज मण्डी विशिष्ट श्रेणी को एशिया की आदर्श मण्डी के रूप में विकसित किया जाएगा। सैनी बूंदी जिले के कुवारंती गांव के समीप 3.10 करोड़ की लागत से नवनिर्मित कृषि उपज मण्डी विशिष्ट श्रेणी के लोकार्पण समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री की मंशानुरूप वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दोगुना करने के लिए राज्य सरकार द्वारा हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। निश्चित रूप से निर्धारित वर्ष तक किसानों की आय को बढ़ाकर इस सपने को साकार किया जाएगा। एक ही छत के नीचे सभी तरह की सब्जियों के गुणवत्तायुक्त बीज उपलब्ध करवाने एवं बाजार विकसित करने के लिए भी सरकार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार किसानों की स्थिति को बेहतर बनाने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि विक्रय प्लेटफार्म का पूरा भर जाना समृद्धि का सूचक है। बूंदी के लोगों को कृषि जिंसों को मण्डी लाने के दौरान लगने वाले जाम से राहत मिलेगी, साथ ही किसानों को उपज का वाजिब दाम मिलेगा। कृषि मंत्री ने उन्होंने कहा कि शीघ्र कृषि मण्डी में किसान कलेवा योजना शुरू कर काश्तकारों को 5 रुपए की दर पर भोजन उपलब्ध करवाया जाएगा। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में युवाओं को प्रोत्साहित करने की मंशा से वेयर हाउसिंग एवं प्रोसेसिंग इकाई निर्माण पर राज्य सरकार द्वारा 20 लाख रुपए तक की सबसिडी का प्रावधान किया गया है। साथ ही इसके लिए भूमि रूपांतरण की जरूरत भी नहीं होगी। शीघ्र ही ई पोर्टल के जरिए खरीद फरोख्त करने वाले किसानों के लिए राज्य में पुरस्कार योजना शुरू की जाएगी। किसानों की सुविधा के लिए एक देश एक मण्डी योजना लागू की जा रही है। इसके अलावा राज्य में 25 राष्ट्रीय कृषि बाजार विकसित किए गए है। उन्होंने कहा कि किसानों को उनकी उपज का वाबिज दाम दिलाना सरकार की पहली प्राथमिकता है। भारत का पहला फ्लॉवर वैली एक्सीलेंसी सेंटर राजस्थान के माउंट आबू में बनाया जाएगा। करीब 11 बीघा भूमि पर बनने वाले इस फ्लॉवर वैली एक्सीलेंसी सेंटर के निर्माण से पर्यटन विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।

पोस मशीन से ही होगी उर्वरकों की बिक्री

जयपुर (कासं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि एक नवम्बर, से राज्य में उर्वरकों की बिक्री पोस मशीन के माध्यम से ही की जाएगी। उन्होंने बताया कि पात्र व्यक्ति को ही सब्सिडी का फायदा मिल सके इसके लिए भारत सरकार की प्रत्यक्ष लाभ हस्तान्तरण योजना के तहत यह निर्णय किया गया है। किलक ने बताया कि 1 नवम्बर के बाद कोई भी कृषि आदान विक्रेता किसानों को सीधे ही उर्वरक नहीं बेच पाएगा। उन्होंने बताया कि सहकारिता के क्षेत्र में कृषि आदान का व्यवसाय कर रही संस्थाओं क्रय-विक्रय सहकारी समितियों एवं ग्राम सेवा सहकारी समितियों को पोस मशीनों में नए सिरे से स्टॉक का इन्द्राज करने के निर्देश जारी कर दिए गए हैं। रजिस्ट्रार एवं प्रमुख शासन सचिव, सहकारिता अभय कुमार ने बताया कि उर्वरक बिक्री केन्द्रों पर लगाई गई पोस मशीनों में नवीनतम सॉफ्टवेयर इंस्टॉल कर भौतिक रूप से उपलब्ध उर्वरक स्टॉक का इन्द्राज करवाया जा रहा है। पोस मशीन के माध्यम से उर्वरकों की बिक्री होने से राष्ट्रीय स्तर पर उर्वरकों की खपत पर निगरानी रखते हुए भविष्य में कृषि क्षेत्र में इनकी उपयोगिता के संबंध में निर्णय में मदद मिल सकेगी। उर्वरकों की बिक्री के लिए पोस मशीन के उपयोग से किसानों को उर्वरकों की बेहतर उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। इस व्यवस्था से उर्वरकों पर दी जा रही सब्सिडी के दुरूपयोग पर रोक लगेगी तथा किसान सीधे तौर पर लाभान्वित होगा।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र एक कॉल की दूरी पर

उदित ओवरसीज प्रा.लि.

राजस्थान सरकार द्वारा उर्वरक अब मान्यता प्राप्त दरों व अनुदान पर उपलब्ध

फर्टिलाइजर
1. जिंक सल्फेट 21 प्रश.
2. जिंक सल्फेट 33 प्रश.
3. फेरस सल्फेट 19 प्रश.
4. कॉपर सल्फेट 24 प्रश.
5. मैग्नीशियम सल्फेट 9.6 प्रश.

बायो फर्टिलाइजर
1. राइजोबियम पाउडर
2. एजेटोबेक्टर पाउडर
3. पी.एस.बी. पाउडर

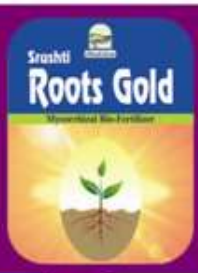

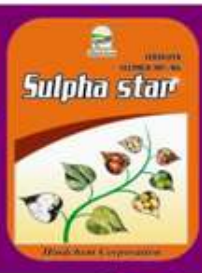

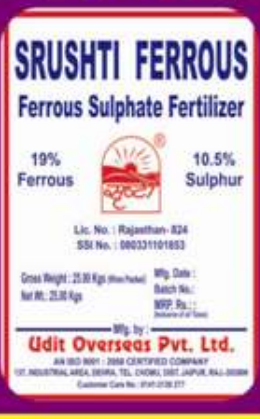

FERTILIZER
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- FERROUS EDTA 12%
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

BIO FERTILIZERS
- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

WELCOME INQUIRY Contact : 7975653498 (Rajesh Sharma)

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com